APPENDIX - IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) ....DURGA SEN........
   (In Hindi) ....दुर्गा सैन........

2. Title of the Research Work :
   (In English) SHABDHARTH CHINTAN IN SANSKRIT KAVYA SHASTRA TRADITION : A CRITIQUE STUDY
   (In Hindi) संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

3. Location
   a. Institution/Department where the work is to be done
   b. Geographical area of Investigation, if any.

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7. Major Hypothesis, if any.
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

दुर्गा सैन 10/5/15
Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

[signature] 10.5.15

Name and Signature of supervisor with date & seal.

व्याख्याता........
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

....
....
....

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. DURGA SEN on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have 05 (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is 03 (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

10.5.15

Signature of the Supervisor with date

व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. DURGA SEN for research work if he/she is registered for Ph.D.

उप-प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

10.5.15

Signature of the Head, Department with date

व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ-चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत-काव्यशास्त्रीय-परम्परायां शब्दार्थ-चिन्तनम् : एकं समीक्षात्मकमध्ययनम्

SHABDHARTH CHINTAN IN SANSKRIT KAVYA SHASTRA TRADITION : A CRITIQUE STUDY

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को कला संकाय में पीएच.डी. (संस्कृत) की
उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

संशोधित

शोध-प्रस्ताव की रूपरेखा

<u>शोध निर्देशिका</u>
डॉ. बीना चौधरी
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

<u>शोधार्थी</u>
दुर्गा सैन

विश्वविद्यालय
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
वर्ष - २०१५

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को

कला संकाय में पीएच.डी. (संस्कृत) की

उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

शोध - प्रस्ताव की रूपरेखा

१.	**शोधार्थी का नाम**	:	**दुर्गा सैन**
२.	**शोध विषय**	:	**संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन**
३.	**शोध संस्थान**	:	संस्कृत-विभाग राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX – IV

Format for Outline of Proposed Research Work

(To be supplied in eight copies)

1.	**Name of Scholar (In English)**	:	**DURGA SEN**
	(In Hindi)	:	**दुर्गा सैन**
2.	**Title of the research work**	:	
	(In English)	:	**SHABDHARTH CHINTAN IN SANSKRIT KAVYA SHASTRA TRADITION : A CRITIQUE STUDY**
	(In Hindi)	:	**संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन**
	(In Sanskrit)	:	**संस्कृत-काव्यशास्त्रीय-परम्परायां शब्दार्थ-चिन्तनम् : एकं समीक्षात्मकमध्ययनम्**
3.	**Location**	:	
	(In English)	:	Sanskrit Department Govt. Collage, Ajmer
	(a) **Institution/Department where the work is to be done**	:	संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

४. प्रस्तावित अन्वेषण का महत्त्व :-

(Importance of Proposed Investigation)	: **संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन** शोध विषय का महत्व शब्दार्थ चिन्तन में वर्णित हैं।

शब्द

आचार्य दण्डी महोदय प्रणीत काव्य ग्रन्थ ''काव्यादर्श'' के अन्तर्गत शब्द की महत्ता के विषय में वर्णन करते है -

इन्दमन्धतमं कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्,

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।

- दण्डी ''काव्यादर्श'' १/४

अर्थात् यह सम्पूर्ण संसार अन्धकारपूर्ण हो जाता, यदि संसार में शब्द स्वरूप ज्योति का प्रकाश नहीं होता।

अर्थात् यह संसार शब्द रूपी प्रकाश से दृश्यमान है, बिना शब्द के सम्पूर्ण संसार अन्धकारमय हो जाएगा।

शब्द के माध्यम से सम्पूर्ण चराचर जगत अपने अस्तिव को प्रकाशित करने में समर्थ हो पाता है।

शब्द की महत्ता के विषय में अन्यत्र कहा भी गया है -

येन उच्चारितेन वस्तु ज्ञानं भवति सः शब्दः।

अर्थात् जिसके उच्चारण मात्र से वस्तु का ज्ञान होता है, उसे शब्द कहते है।

अर्थ

आचार्य पण्डित राजजगन्नाथ ने शब्द की अपेक्षा अर्थ को महत्व देते हुए वर्णित किया है –

''रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्द काव्यम्''।

(रसगंगाधर १/१)

रमणीय अर्थ का पतिपादक शब्द ही ''काव्य'' है, अर्थात् जिस शब्द से रमणीय अर्थ का बोध हो, वह शब्द ''काव्य'' है।

''अर्थ'' के महत्व को वर्णित करते हुए महान शब्दवेत्ता आचार्य यास्क ने भी कहा है कि–

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेद न विजानाति योऽथम्।
योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमति ज्ञानविधूतपाप्मा॥

– निरुक्त ६.१८

अर्थात् जो वेद पढ़कर उसका अर्थ नहीं जानता वह ठूठँ है, भारवाहक पशु है। जो अर्थ जानता है उसे ही समस्त कल्याण प्राप्त होता है। वही ज्ञान की ज्योति से पापों को नष्ट करके ब्रह्म तत्व को प्राप्त करता है।

अर्थात् शब्दों के अर्थों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक हैं। अन्यत्र निरूक्त में यास्क ने अर्थ को वाणी का पुष्प और फल कहा है –

''अर्थं वाचः पुष्पफलमाह''

(निरुक्त ६/२०)

शब्द के साथ अथ का महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। अकेले शब्द अथवा अकेले अर्थ से काव्य की रचना सम्भव नहीं है। शब्द और अर्थ दोनों से मिलकर काव्य रचना सम्भव है। इसी को स्पष्ट करते हुए भामह ने कहा है –

''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्''।

(काव्यालङ्कार १/१६)

शब्द और अर्थ के अपरिहार्य महत्त्व का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास ने रघुवंशम् के मंगलाचरण में कहा है –

''वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तय।''

(रघुवंश १/१)

शब्द और अर्थ परस्पर जुड़े हुए हैं इन्हें पृथक् नहीं किया जा सकता यदि शब्द और अर्थ को पृथक कर दिया जाए तो दोनों ही अपनी सत्ता खो देंगे जैसे शरीर के बिना आत्मा और आत्मा के बिना शरीर। अत: काव्य–शरीर का निर्माण यदि शब्द से होता है तो उसकी आत्मा अर्थ है।

जो शब्द अर्थ युक्त होता है, वही कल्याणकारी अथाण कल्याण को प्राप्त करता है।

अत: काव्य क्षेत्र में जिस शब्दार्थ का विस्तृत व सारगर्भित विवेचन किया गया है उसे जन–मानस के समक्ष लाना मेरे शोध–विषय का ध्येय है।

५. <u>अनुसन्धान-कार्य का पुनरावलोकन</u>

(**<u>Review of Wark already done on the subject of Prapused Research Study</u>**)

''संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय शोध का पूर्णत: पृथक् एवं नवीन विषय है। इससे पूर्व शब्दार्थ पर शोध व्याकरण की दृष्टि से किया गया है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से इस विषय पर किसी ने शोध नहीं किया है।

काव्यशास्त्र के लक्षण ग्रन्थों में काव्य की दृष्टि से अनेक लक्षणकारों ने विविध प्रकार से शब्दार्थ विवेचन प्रस्तुत किया हैं जिनका समीक्षात्मक अध्ययन इस शोध में प्रस्तुत किया जायेगा।

भामह, दण्डी, वामन, रुद्रट, आनन्दवर्धन, कुन्तक, मम्मट इत्यादि आचार्यों ने काव्य-लक्षण ग्रन्थों की रचना की है। काव्य-लक्षण ग्रन्थों के अन्तर्गत काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन इत्यादि विषयों का विशद विवेचन किया है। काव्य-शास्त्रीय परम्परा में मम्मटाचार्य कृत काव्य-लक्षण ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' में सम्पूर्ण साहित्य शास्त्र के समग्र सिद्धान्तों का वर्णन सूत्रशैली के माध्यम से बड़े ही सुव्यवस्थित माध्यम से किया गया है जिसके कारण वर्तमान में भी ''काव्यप्रकाश'' ग्रन्थ को आदरणीय स्थान प्राप्त है। काव्य जगत की यह मान्यता है कि काव्यप्रकाश पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काव्य लक्षण ग्रन्थों का एक समग्र ग्रन्थ है।

अत: इस शोध कार्य से साहित्य शास्त्र में वर्णित शब्दार्थ चिन्तन दृश्यमान तथा स्पष्ट होगा तथा वहीं यह शोध कार्य भावी गवेषकों, विद्यार्थियों एवं विद्ववत् समाज हेतु सहायक होगा।

६. प्रस्तावित गवेषणा के क्षेत्र में निर्देशित शोध अन्तराल

(Research Gaps identified in the proposed field of Investigation)

शब्द के अर्थ, पर्यायवाची, समानार्थक, विभिन्न भाषाओं में अर्थ व्युत्पत्ति, निर्वचन परक कार्य तो प्राचीन काल से वर्तमान तक अनेक आचार्यों ने शब्द-कोशों के माध्यम से किया गया है किन्तु शब्द व अर्थ की सत्ता तथा शब्दार्थ चिन्तन परक कोई भी कार्य स्वतन्त्र रूप में अभी तक नहीं किया गया है।

शब्दार्थ के विषय में यत्र-तत्र किंचन मात्र उल्लेख प्राप्त होता है, किन्तु वह लेशमात्र भी साहित्य क्षेत्र से सम्बद्ध नहीं है।

अत: साहित्य विषय में वर्णित अद्वितीय व विशद शब्दार्थ चिन्तन को शैक्षणिक समाज के सम्मुख प्रकट करने हेतु इस विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया है।

७. उद्देश्य

(Objectives)

१. संस्कृत काव्यशास्त्रोय परम्परा में वर्णित ''शब्द'' की सत्ता का विवेचन।

२. संस्कृत काव्यशास्त्रोय परम्परा में वर्णित ''अर्थ'' की सत्ता का विवेचन।

३. संस्कृत काव्यशास्त्रोय परम्परा में वर्णित ''शब्दार्थ'' का विवेचन।

८. शोध प्रविधि के संदर्श व संदर्श विधि

(Material and Methods/Research Methodolgy)

विविध साहित्य शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों का संकलन कर शोध संस्थानों में परिभ्रमण कर, विविध ग्रन्थों के अध्ययन की टिप्पणियाँ, प्रश्नावली शोध विधि द्वारा विषय सामग्री संकलन कर अपने शोधकार्य को अग्रसित करूँगी।

१- काव्यशास्त्र के ग्रन्थों का अनुशीलन कर शब्द, अर्थ व शब्दार्थ के महत्त्व को वर्णित करने वाले तथ्यों का चयन एवं संग्रहण करना।

२- शोध-कार्य हेतु अनुमानित कार्य अवधि -

शोध कार्य दो वर्ष अर्थात् २४ माह की अवधि में शोधविधि तथा प्रविधियों सहित पूर्ण होने की आशा की जाती है। उक्त शोध कार्य की अवधि वार नियोजन इस प्रकाश है -

(१) उक्त गवेषणा की न्यूनतम अवधि - १८ माह

(२) समायोजन एवं विश्लेषण ३ माह

(३) संशोधन, टंकण, लेखन आदि कार्य ३ माह अनुमानित है।

३- शोधकार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएँ -

इस शोध कार्य के निष्पादन हेतु मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर राजधानी जयपुर नगरी में स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर, अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर वैदिक पुस्तकालय, डी.ए.वी. महाविद्यालय, अजमेर सूचना केन्द्र, अजमेर, सार्वजनिक पुस्तकालय, अजमेर, दिल्ली

विश्वविद्यालय, श्रीमद्-दयानन्द-वेदार्ष महाविद्यालय, अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर उपयोग करने का प्रयास करूँगी जिससे शोध कार्य को उत्तमोत्तम रूप से सम्पूर्ण कर सकूँ।

४- शोधकर्त्ता के शोध-संस्थान में पुस्तकालय की प्राप्त सुविधा -

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय तथा राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के पुस्तकालय में दुर्लभग्रन्थों की अमूल्य निधि हैं। जहाँ विविध शब्द-कोष, विश्व-कोष, पत्र-पत्रिकाएँ एवं शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विषयों के उच्चतम अध्ययन सम्बन्धित शोध पुस्तकें संग्रहित है।

शोध कार्य का निष्कर्ष

यह शोध कार्य विशेषत: साहित्य क्षेत्र के शोधार्थी, अध्यापकों, व्याख्याताओं के लिए अत्यधिक लाभदायक होगा। इससे उन्हें काव्य शास्त्र के इतिहास तथा काव्य शास्त्रों में वर्णित शब्द एवं अर्थ तथा शब्दार्थ की व्यापक स्तर विवेचना उपलब्ध हो गई। काव्य-शास्त्र में वर्णित शब्दार्थ चिन्तन का प्रस्तुतीकरण ही मेरे शोधकार्य का मुख्य ध्येय एवं निष्कर्ष होगा।

Signature of Candidate
with Date

Outline of the Synopsis approved

Signature of the Supervisar
with Date

प्रस्तावित शोध का अध्यायवार विवरण

विवरण

प्राक्कथन

कृतज्ञता ज्ञापन

संकेताक्षर सूची

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय : **[प्रतिपाद्य-विषय-परिचय]**

१. काव्यशास्त्र का उद्भव एवं विकास

२. काव्यशास्त्रीय लक्षणकारों का क्रमिक-विवरण

द्वितीय अध्याय : **[शब्द-अर्थ-विमर्श]**

१. ''शब्द'' का कोशीय एवं निर्वचनपरकाथ

२. ''शब्द'' का स्वरूप एवं महत्त्व

३. ''अर्थ'' का कोशीय एवं निर्वचनपरकार्थ

४. ''अर्थ'' का स्वरूप एवं महत्त्व

तृतीय अध्याय : **[काव्यशास्त्रीय लक्षण-ग्रन्थों में शब्दार्थ विवेचन]**

१. शब्द के प्रकार

२. अर्थ के प्रकार

३. शब्द-शक्तियाँ

चतुर्थ अध्याय : **[शब्दार्थ के गुण]**

१. गुण–परिभाषा

२. गुण–भेद

पञ्चम अध्याय : **[शब्दार्थ के दोष]**

१. दोष–परिभाषा

२. दोष–भेद

षष्ठम अध्याय : **[शब्दार्थ के शोभाधायक तत्त्व–अलंकार]**

१. अलंकार–परिभाषा

२. अलंकार–भेद

(i) शब्दालंकार

(ii) अर्थालंकार

विषयसमुपसंहार

सन्दर्भीय ग्रन्थ सूची

Signature of the Supervisar
with Date

Signature of Candidate
with Date

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

क्र. सं.	ग्रन्थ	लेखक/ व्याख्याकार	सम्पादक/ प्रकाशक	संस्करण
१.	अलङ्कारशास्त्र का इतिहास	डॉ. जगन्नाथ पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयुर	१९९९
२.	अलङ्कार शास्त्रेतिहासः	डॉ. रामकुमार दाधीच	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२०१०
३.	अलङ्कार प्रकाश	डॉ. जयन्त मिश्र	मोती लाल वनारसीदास वाराणसी	२००७
४.	काव्य प्रकाश	आचार्य विश्वेश्वर	वाराणसी	२००७
५.	काव्य दीपिका	रामसागर त्रिपाठी	मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी	२००६
६.	अमर कोश	अमरसिंह	भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता	१९६८
७.	काव्यमीमांसा	राजशेखर	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	२००४
८.	काव्य प्रकाश	मम्मट	साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ	२००६
९.	काव्यप्रकाश	झलकीकर टीका	परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली	२०१२
१०.	काव्यालोक	डॉ. रमा गुप्ता	पब्लिकेशन स्कीम जयपुर	१९८९
११.	व्यक्ति विवेक	रेवा प्रसाद द्विवेदी	चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी	२००५
१२.	कुवलयानन्द	डॉ. भोलाशंकर व्यास	चौखम्बा विद्या भवन बनारस	२०१०

१३.	काव्यालङ्कारसूत्राणि	पं. श्री हरगोविन्द शास्त्री	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन	२०१०
१४.	औचित्य विचार चर्चा	आचार्य श्री ब्रज मोहन झा	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी	२००७
१५.	दशरूपक	धनञ्जय	विश्वद्यिालय प्रकाशन वाराणसी	१९७३
१६.	वाचस्पत्यम्	तारानाथ तर्क वाचस्पति	श.स.	१८०८
१७.	वैदिक-कोष	हंसराज,	लाहौर	१९२६
१८.	शब्दकल्पद्रुम	राधाकान्त दवे	श.स.	१८०८
१९.	शब्द सागर	नागरी प्रचारिणी सभा	काशी	१९१४
२०.	साहित्य दर्पण	विश्वनाथ, मोतीलाल	बनारसी दास बंगलो रोड दिल्ली	१९६१
२१.	संस्कृत वाङ्मय कोश	भारतीय भाषा परिषद्	कलकत्ता	१९५७
२२.	हिन्दी संस्कृत कोश	रामस्वरूप रसिकेश,	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी	१९९९
२३.	काव्य मीमांसा आचार्य राजशेखर विरचित	रामशंकर त्रिपाठी	मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी	२०१२
२४.	काव्य मीमांसा	रविकान्त मणि	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२००८
२५.	भरतमुनि विरचित नाट्यशास्त्रम्	डॉ. रूपनाराण त्रिपाठी	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२००८
२६.	माघ विरचित शिशु-पालवधम्	डॉ. रामदेव साहू	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२००९
२७.	वक्रोक्ति जीवितम्	डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	२००७

२८.	व्याकरण महाभाष्य (पश्पशाह्निकम्)	डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	२००७
२९.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	श्रीकलानाथ शास्त्री	यूनिक ट्रेडर्स	२००३
३०.	संस्कृत व्याकरण का इतिहास	आचार्य श्री युधिष्ठिर मीमासंक	रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री	२००३
३१.	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास	पी.वी. काण्डे	मोतीलाल बनारसोदास वाराणसी	
३२.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र मिश्र	चौखम्बा प्रकाशन	२००७
३३.	संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ	द्वारिका प्रसाद शर्मा	–	
३४.	संस्कृत साहित्य का	डॉ. पुष्कर दत्त शर्मा	अजमेरा बुक कम्पनी	२००३
३५.	संस्कृत निबन्ध शतकम्	डॉ. कपिल द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाश वाराणसी	२००३
३६.	अलंकारशास्त्र की परम्परा	डॉ. राजवंश सहाय ''हीरा''	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	२००५
३७.	राजानकमुकुलभट्टप्रणीत अभिधावृत्तमातृका	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	२०११
३८.	आचार्यहेमचन्द्रविरचितं काव्यानुशासनम्	डॉ. रामानन्द शर्मा	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी	२०००
३९.	आचार्यदण्डीप्रणीत काव्यादर्श	डॉ. जमुना पाठक	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी	२००५
४०.	भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार	डॉ. भोला शंकर व्यास	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	१९६५

पत्र-पत्रिकाएँ

भारतोदय (मा)	:	गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार
वेदवाणी (मा)	:	रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत
परोपकारी	:	परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर
लोक संस्कृतम् (त्रै)	:	संस्कृत कार्यालय श्री अरविन्दाश्रम, पदुच्चेरी
स्वरमंगला	:	संस्कृत अकादमी, जयपुर

Signature of the Supervisar
with Date

Signature of Candidate
with Date

APPENDIX - IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) ....DURGA SEN........
   (In Hindi) ....दुर्गा सैन........
2. Title of the Research Work :
   (In English) SHABDHARTH CHINTAN IN SANSKRIT KAVYA SHASTRA TRADITION : A CRITIQUE STUDY
   (In Hindi) संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन
3. Location
   a. Institution/Department where the work is to be done
   b. Geographical area of Investigation, if any.
4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7. Major Hypothesis, if any.
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

दुर्गा सैन 10/5/15
Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

[signature] 10.5.15

Name and Signature of supervisor with date & seal.

व्याख्याता..........
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

....
....
....

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY,
AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. DURGA SEN on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have 05 (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is 03 (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

10.5.15

Signature of the Supervisor with date

व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. DURGA SEN for research work if he/she is registered for Ph.D.

उप-प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Principal/
Director of the Institution with date

10.5.15

Signature of the Head,
Department with date

व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ-चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत-काव्यशास्त्रीय-परम्परायां शब्दार्थ-चिन्तनम् : एकं समीक्षात्मकमध्ययनम्

SHABDHARTH CHINTAN IN SANSKRIT KAVYA SHASTRA TRADITION : A CRITIQUE STUDY

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को कला संकाय में पीएच.डी. (संस्कृत) की
उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

संशोधित

शोध-प्रस्ताव की रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ. बीना चौधरी
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

शोधार्थी
दुर्गा सैन

विश्वविद्यालय
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

वर्ष - २०१५

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को

कला संकाय में पीएच.डी. (संस्कृत) की

उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

शोध – प्रस्ताव की रूपरेखा

१.	**शोधार्थी का नाम**	:	**दुर्गा सैन**
२.	**शोध विषय**	:	**संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन**
३.	**शोध संस्थान**	:	संस्कृत–विभाग राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX – IV

Format for Outline of Proposed Research Work

(To be supplied in eight copies)

1.	**Name of Scholar (In English)**	:	**DURGA SEN**
	(In Hindi)	:	**दुर्गा सैन**
2.	**Title of the research work**	:	
	(In English)	:	**SHABDHARTH CHINTAN IN SANSKRIT KAVYA SHASTRA TRADITION : A CRITIQUE STUDY**
	(In Hindi)	:	**संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन**
	(In Sanskrit)	:	**संस्कृत-काव्यशास्त्रीय-परम्परायां शब्दार्थ-चिन्तनम् : एकं समीक्षात्मकमध्ययनम्**
3.	**Location**	:	
	(In English)	:	Sanskrit Department Govt. Collage, Ajmer
(a)	**Institution/Department where the work is to be done**	:	संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

४. <u>प्रस्तावित अन्वेषण का महत्त्व</u> :-

<u>(Importance of Proposed Investigation)</u> : **संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन**

शोध विषय का महत्व शब्दार्थ चिन्तन में वर्णित हैं।

<u>शब्द</u>

आचार्य दण्डी महोदय प्रणीत काव्य ग्रन्थ ''काव्यादर्श'' के अन्तर्गत शब्द की महत्ता के विषय में वर्णन करते है -

इन्दमन्धंतमं कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्,

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।

- दण्डी ''काव्यादर्श'' १/४

अर्थात् यह सम्पूर्ण संसार अन्धकारपूर्ण हो जाता, यदि संसार में शब्द स्वरूप ज्योति का प्रकाश नहीं होता।

अर्थात् यह संसार शब्द रूपी प्रकाश से दृश्यमान है, बिना शब्द के सम्पूर्ण संसार अन्धकारमय हो जाएगा।

शब्द के माध्यम से सम्पूर्ण चराचर जगत अपने अस्तिव को प्रकाशित करने में समर्थ हो पाता है।

शब्द की महत्ता के विषय में अन्यत्र कहा भी गया है -

येन उच्चारितेन वस्तु ज्ञानं भवति सः शब्दः।

अर्थात् जिसके उच्चारण मात्र से वस्तु का ज्ञान होता है, उसे शब्द कहते है।

<u>अर्थ</u>

आचार्य पण्डित राजजगन्नाथ ने शब्द की अपेक्षा अर्थ को महत्व देते हुए वर्णित किया है –

''रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्द काव्यम्''।

(रसगंगाधर १/१)

रमणीय अर्थ का पतिपादक शब्द ही ''काव्य'' है, अर्थात् जिस शब्द से रमणीय अर्थ का बोध हो, वह शब्द ''काव्य'' है।

''अर्थ'' के महत्व को वर्णित करते हुए महान शब्दवेत्ता आचार्य यास्क ने भी कहा है कि–

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेद न विजानाति योऽथम्।
योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमति ज्ञानविधूतपाप्मा॥

– निरुक्त ६.१८

अर्थात् जो वेद पढ़कर उसका अर्थ नहीं जानता वह ठूठँ है, भारवाहक पशु है। जो अर्थ जानता है उसे ही समस्त कल्याण प्राप्त होता है। वही ज्ञान की ज्योति से पापों को नष्ट करके ब्रह्म तत्व को प्राप्त करता है।

अर्थात् शब्दों के अर्थों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक हैं। अन्यत्र निरूक्त में यास्क ने अर्थ को वाणी का पुष्प और फल कहा है –

''अर्थं वाचः पुष्पफलमाह''

(निरुक्त ६/२०)

शब्द के साथ अथ का महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। अकेले शब्द अथवा अकेले अर्थ से काव्य की रचना सम्भव नहीं है। शब्द और अर्थ दोनों से मिलकर काव्य रचना सम्भव है। इसी को स्पष्ट करते हुए भामह ने कहा है –

''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्''।

(काव्यालङ्कार १/१६)

शब्द और अर्थ के अपरिहार्य महत्त्व का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास ने रघुवंशम् के मंगलाचरण में कहा है –

''वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तय।''

(रघुवंश १/१)

शब्द और अर्थ परस्पर जुड़े हुए हैं इन्हें पृथक् नहीं किया जा सकता यदि शब्द और अर्थ को पृथक कर दिया जाए तो दोनों ही अपनी सत्ता खो देंगे जैसे शरीर के बिना आत्मा और आत्मा के बिना शरीर। अतः काव्य-शरीर का निर्माण यदि शब्द से होता है तो उसकी आत्मा अर्थ है।

जो शब्द अर्थ युक्त होता है, वही कल्याणकारी अथाण कल्याण को प्राप्त करता है।

अतः काव्य क्षेत्र में जिस शब्दार्थ का विस्तृत व सारगर्भित विवेचन किया गया है उसे जन-मानस के समक्ष लाना मेरे शोध-विषय का ध्येय है।

५. अनुसन्धान-कार्य का पुनरावलोकन

(**Review of Wark already done on the subject of Prapused Research Study**)

''संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन : एक समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय शोध का पूर्णत: पृथक् एवं नवीन विषय है। इससे पूर्व शब्दार्थ पर शोध व्याकरण की दृष्टि से किया गया है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से इस विषय पर किसी ने शोध नहीं किया है।

काव्यशास्त्र के लक्षण ग्रन्थों में काव्य की दृष्टि से अनेक लक्षणकारों ने विविध प्रकार से शब्दार्थ विवेचन प्रस्तुत किया हैं जिनका समीक्षात्मक अध्ययन इस शोध में प्रस्तुत किया जायेगा।

भामह, दण्डी, वामन, रुद्रट, आनन्दवर्धन, कुन्तक, मम्मट इत्यादि आचार्यों ने काव्य-लक्षण ग्रन्थों की रचना की है। काव्य-लक्षण ग्रन्थों के अन्तर्गत काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन इत्यादि विषयों का विशद विवेचन किया है। काव्य-शास्त्रीय परम्परा में मम्मटाचार्य कृत काव्य-लक्षण ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' में सम्पूर्ण साहित्य शास्त्र के समग्र सिद्धान्तों का वर्णन सूत्रशैली के माध्यम से बड़े ही सुव्यवस्थित माध्यम से किया गया है जिसके कारण वर्तमान में भी ''काव्यप्रकाश'' ग्रन्थ को आदरणीय स्थान प्राप्त है। काव्य जगत की यह मान्यता है कि काव्यप्रकाश पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काव्य लक्षण ग्रन्थों का एक समग्र ग्रन्थ है।

अत: इस शोध कार्य से साहित्य शास्त्र में वर्णित शब्दार्थ चिन्तन दृश्यमान तथा स्पष्ट होगा तथा वहीं यह शोध कार्य भावी गवेषकों, विद्यार्थियों एवं विद्वत् समाज हेतु सहायक होगा।

६. प्रस्तावित गवेषणा के क्षेत्र में निर्देशित शोध अन्तराल

(Research Gaps identified in the proposed field of Investigation)

शब्द के अर्थ, पर्यायवाची, समानार्थक, विभिन्न भाषाओं में अर्थ व्युत्पत्ति, निर्वचन परक कार्य तो प्राचीन काल से वर्तमान तक अनेक आचार्यों ने शब्द–कोशों के माध्यम से किया गया है किन्तु शब्द व अर्थ की सत्ता तथा शब्दार्थ चिन्तन परक कोई भी कार्य स्वतन्त्र रूप में अभी तक नहीं किया गया है।

शब्दार्थ के विषय में यत्र–तत्र किंचन मात्र उल्लेख प्राप्त होता है, किन्तु वह लेशमात्र भी साहित्य क्षेत्र से सम्बद्ध नहीं है।

अत: साहित्य विषय में वर्णित अद्वितीय व विशद शब्दार्थ चिन्तन को शैक्षणिक समाज के सम्मुख प्रकट करने हेतु इस विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया है।

७. उद्देश्य

(Objectives)

१. संस्कृत काव्यशास्त्रोय परम्परा में वर्णित ''शब्द'' की सत्ता का विवेचन।

२. संस्कृत काव्यशास्त्रोय परम्परा में वर्णित ''अर्थ'' की सत्ता का विवेचन।

३. संस्कृत काव्यशास्त्रोय परम्परा में वर्णित ''शब्दार्थ'' का विवेचन।

८. शोध प्रविधि के संदर्श व संदर्श विधि

(Material and Methods/Research Methodolgy)

विविध साहित्य शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों का संकलन कर शोध संस्थानों में परिभ्रमण कर, विविध ग्रन्थों के अध्ययन की टिप्पणियाँ, प्रश्नावली शोध विधि द्वारा विषय सामग्री संकलन कर अपने शोधकार्य को अग्रसित करूँगी।

१- काव्यशास्त्र के ग्रन्थों का अनुशीलन कर शब्द, अर्थ व शब्दार्थ के महत्त्व को वर्णित करने वाले तथ्यों का चयन एवं संग्रहण करना।

२- शोध-कार्य हेतु अनुमानित कार्य अवधि -

शोध कार्य दो वर्ष अर्थात् २४ माह की अवधि में शोधविधि तथा प्रविधियों सहित पूर्ण होने की आशा की जाती है। उक्त शोध कार्य की अवधि वार नियोजन इस प्रकाश है -

(१) उक्त गवेषणा की न्यूनतम अवधि - १८ माह

(२) समायोजन एवं विश्लेषण ३ माह

(३) संशोधन, टंकण, लेखन आदि कार्य ३ माह अनुमानित है।

३- शोधकार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएँ -

इस शोध कार्य के निष्पादन हेतु मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर राजधानी जयपुर नगरी में स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर, अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर वैदिक पुस्तकालय, डी.ए.वी. महाविद्यालय, अजमेर सूचना केन्द्र, अजमेर, सार्वजनिक पुस्तकालय, अजमेर, दिल्ली

विश्वविद्यालय, श्रीमद्-दयानन्द-वेदार्ष महाविद्यालय, अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर उपयोग करने का प्रयास करूँगी जिससे शोध कार्य को उत्तमोत्तम रूप से सम्पूर्ण कर सकूँ।

४- शोधकर्त्ता के शोध-संस्थान में पुस्तकालय की प्राप्त सुविधा -

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय तथा राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के पुस्तकालय में दुर्लभग्रन्थों की अमूल्य निधि हैं। जहाँ विविध शब्द-कोष, विश्व-कोष, पत्र-पत्रिकाएँ एवं शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विषयों के उच्चतम अध्ययन सम्बन्धित शोध पुस्तकें संग्रहित है।

शोध कार्य का निष्कर्ष

यह शोध कार्य विशेषत: साहित्य क्षेत्र के शोधार्थी, अध्यापकों, व्याख्याताओं के लिए अत्यधिक लाभदायक होगा। इससे उन्हें काव्य शास्त्र के इतिहास तथा काव्य शास्त्रों में वर्णित शब्द एवं अर्थ तथा शब्दार्थ की व्यापक स्तर विवेचना उपलब्ध हो गई। काव्य-शास्त्र में वर्णित शब्दार्थ चिन्तन का प्रस्तुतीकरण ही मेरे शोधकार्य का मुख्य ध्येय एवं निष्कर्ष होगा।

Signature of Candidate
with Date

Outline of the Synopsis approved

Signature of the Supervisar
with Date

<u>**प्रस्तावित शोध का अध्यायवार विवरण**</u>

<u>**विवरण**</u>

प्राक्कथन

कृतज्ञता ज्ञापन

संकेताक्षर सूची

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में शब्दार्थ चिन्तन :

एक समीक्षात्मक अध्ययन

<u>**प्रथम अध्याय**</u> : <u>**[प्रतिपाद्य-विषय-परिचय]**</u>

१. काव्यशास्त्र का उद्‌भव एवं विकास

२. काव्यशास्त्रीय लक्षणकारों का क्रमिक-विवरण

<u>**द्वितीय अध्याय**</u> : <u>**[शब्द-अर्थ-विमर्श]**</u>

१. ‘‘शब्द’’ का कोशीय एवं निर्वचनपरकाथ

२. ‘‘शब्द’’ का स्वरूप एवं महत्त्व

३. ‘‘अर्थ’’ का कोशीय एवं निर्वचनपरकार्थ

४. ‘‘अर्थ’’ का स्वरूप एवं महत्त्व

<u>**तृतीय अध्याय**</u> : <u>**[काव्यशास्त्रीय लक्षण-ग्रन्थों में शब्दार्थ विवेचन]**</u>

१. शब्द के प्रकार

२. अर्थ के प्रकार

३. शब्द-शक्तियाँ

चतुर्थ अध्याय : **[शब्दार्थ के गुण]**

१. गुण–परिभाषा

२. गुण–भेद

पञ्चम अध्याय : **[शब्दार्थ के दोष]**

१. दोष–परिभाषा

२. दोष–भेद

षष्ठम अध्याय : **[शब्दार्थ के शोभाधायक तत्त्व–अलंकार]**

१. अलंकार–परिभाषा

२. अलंकार–भेद

(i) शब्दालंकार

(ii) अर्थालंकार

विषयसमुपसंहार

सन्दर्भीय ग्रन्थ सूची

Signature of the Supervisar
with Date

Signature of Candidate
with Date

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

क्र. सं.	ग्रन्थ	लेखक/ व्याख्याकार	सम्पादक/ प्रकाशक	संस्करण
१.	अलङ्कारशास्त्र का इतिहास	डॉ. जगन्नाथ पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयुर	१९९९
२.	अलङ्कार शास्त्रेतिहास:	डॉ. रामकुमार दाधीच	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२०१०
३.	अलङ्कार प्रकाश	डॉ. जयन्त मिश्र	मोती लाल वनारसीदास वाराणसी	२००७
४.	काव्य प्रकाश	आचार्य विश्वेश्वर	वाराणसी	२००७
५.	काव्य दीपिका	रामसागर त्रिपाठी	मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी	२००६
६.	अमर कोश	अमरसिंह	भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता	१९६८
७.	काव्यमीमांसा	राजशेखर	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	२००४
८.	काव्य प्रकाश	मम्मट	साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ	२००६
९.	काव्यप्रकाश	झलकीकर टीका	परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली	२०१२
१०.	काव्यालोक	डॉ. रमा गुप्ता	पब्लिकेशन स्कीम जयपुर	१९८९
११.	व्यक्ति विवेक	रेवा प्रसाद द्विवेदी	चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी	२००५
१२.	कुवलयानन्द	डॉ. भोलाशंकर व्यास	चौखम्बा विद्या भवन बनारस	२०१०

१३.	काव्यालङ्कारसूत्राणि	पं. श्री हरगोविन्द शास्त्री	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन	२०१०
१४.	औचित्य विचार चर्चा	आचार्य श्री ब्रज मोहन झा	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी	२००७
१५.	दशरूपक	धनञ्जय	विश्वद्यिालय प्रकाशन वाराणसी	१९७३
१६.	वाचस्पत्यम्	तारानाथ तर्क वाचस्पति	श.स.	१८०८
१७.	वैदिक-कोष	हंसराज,	लाहौर	१९२६
१८.	शब्दकल्पद्रुम	राधाकान्त दवे	श.स.	१८०८
१९.	शब्द सागर	नागरी प्रचारिणी सभा	काशी	१९१४
२०.	साहित्य दर्पण	विश्वनाथ, मोतीलाल	बनारसी दास बंगलो रोड दिल्ली	१९६१
२१.	संस्कृत वाङमय कोश	भारतीय भाषा परिषद्	कलकत्ता	१९५७
२२.	हिन्दी संस्कृत कोश	रामस्वरूप रसिकेश,	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी	१९९९
२३.	काव्य मीमांसा आचार्य राजशेखर विरचित	रामशंकर त्रिपाठी	मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी	२०१२
२४.	काव्य मीमांसा	रविकान्त मणि	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२००८
२५.	भरतमुनि विरचित नाट्यशास्त्रम्	डॉ. रूपनाराण त्रिपाठी	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२००८
२६.	माघ विरचित शिशु-पालवधम्	डॉ. रामदेव साहू	हंसा प्रकाशन, जयपुर	२००९
२७.	वक्रोक्ति जीवितम्	डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	२००७

२८.	व्याकरण महाभाष्य (पश्पशाह्निकम्)	डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	२००७
२९.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	श्रीकलानाथ शास्त्री	यूनिक ट्रेडर्स	२००३
३०.	संस्कृत व्याकरण का इतिहास	आचार्य श्री युधिष्ठिर मीमासंक	रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री	२००३
३१.	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास	पी.वी. काण्डे	मोतीलाल बनारसोदास वाराणसी	
३२.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र मिश्र	चौखम्बा प्रकाशन	२००७
३३.	संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ	द्वारिका प्रसाद शर्मा	–	
३४.	संस्कृत साहित्य का	डॉ. पुष्कर दत्त शर्मा	अजमेरा बुक कम्पनी	२००३
३५.	संस्कृत निबन्ध शतकम्	डॉ. कपिल द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाश वाराणसी	२००३
३६.	अलंकारशास्त्र की परम्परा	डॉ. राजवंश सहाय ''हीरा''	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	२००५
३७.	राजानकमुकुलभट्टप्रणीत अभिधावृत्तमातृका	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	२०११
३८.	आचार्यहेमचन्द्रविरचितं काव्यानुशासनम्	डॉ. रामानन्द शर्मा	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी	२०००
३९.	आचार्यदण्डीप्रणीत काव्यादर्श	डॉ. जमुना पाठक	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी	२००५
४०.	भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार	डॉ. भोला शंकर व्यास	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	१९६५

पत्र-पत्रिकाएँ

भारतोदय (मा)	:	गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार
वेदवाणी (मा)	:	रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत
परोपकारी	:	परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर
लोक संस्कृतम् (त्रै)	:	संस्कृत कार्यालय श्री अरविन्दाश्रम, पदुच्चेरी
स्वरमंगला	:	संस्कृत अकादमी, जयपुर

Signature of the Supervisar
with Date

Signature of Candidate
with Date